अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

आध्यात्मिक जगत के महागुरु के संदेशों से गुंजायमान हो उठा कोच्चि

-द्विदिवसीय प्रवास हेतु अहिंसा यात्रा संग आचार्यश्री पहुंचे राजीव गांधी इंडोर स्टेडियम

-'सहन करो, सफल बनो' का आचार्यश्री ने दिया सूत्र

-आचार्यश्री के स्वागतार्थ पहुंचे विभिन्न महानुभावों ने दी अपनी भावाभिव्यक्ति

02.03.2019 कोच्चि, एर्नाकुलम (केरल): अरब सागर के तट पर स्थित भारत के प्रमुख बंदरगाह व व्यापारिक शहर कोच्चि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी का अपनी अहिंसा यात्रा के साथ पदार्पण ने इस व्यापारिक नगरी में अध्यात्म की एक नवीन चेतना का मानों संचार कर दिया है। वाहनों के कोलाहल, बड़ी-बड़ी इमारतों, अनेकानेक सुसज्जीत व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, समुद्र के रास्ते व्यापार की जाने वाली वस्तुओं का बड़े-बड़े कंटेनरों का आवागमन तो यहां की रोजमर्रा के कार्य हैं, किन्तु वर्तमान में इस नगरी में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति जैसे जनकल्याणकारी संदेशों की गूंज ने लोगों को आध्यात्म क्षेत्र में भी उन्नत बनने को मानों उत्प्रेरित कर रहा है।

जी हां! महातपस्वी, अखण्ड परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमणजी के ज्योतिचरण का स्पर्श पाकर जहां पावन हो रहा है, वहीं आचार्यश्री की अमृतवाणी से यह व्यावसायिक शहर अध्यात्म जगत में उन्नत बन रहा है। शनिवार को प्रातः आचार्यश्री ने इडापल्ली से पावन प्रस्थान किया। अपने नगर में अपने आराध्य को पाकर श्रद्धालुओं का उत्साह मानों चरम पर था। अपने आराध्य के साथ जुलूस में रूप में चल रहे श्रद्धालुओं द्वारा किया जा रहा जयघोष उनके उल्लास का प्रतीक बना हुआ था। शहरवासी आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा साश्चर्य निहार रहे थे। लगभग छह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री शहर स्थित राजीव गांधी इंडोर स्टेडियम में द्विदिवसीय प्रवास हेतु पधारे।

स्टेडियम में आयोजित मुख्य प्रवचन में आचार्यश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि जीवन में सहनशीलता और सहिष्णुता का बहुत महत्त्व है। जीवन में आरोह-अवरोह आते रहते हैं। कभी अपमान की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, तो सम्मान भी प्राप्त हो सकता है। कभी सुख तो कभी दुःख की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। निंदा-प्रशंसा की स्थिति भी जीवन में आ सकता है। आदमी को प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सहिष्णुता को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। जो सहन करता है, वह सफल होता है। सहिष्णुता हर जगह काम की हो। परिवार में सहिष्णुता तो परिवार अच्छा रह सकता है। कभी परिवार के मुखिया को सहन कर लेना चाहिए तो कभी परिवार के मुखिया की बात को अन्य सदस्यों को भी सहन कर लेना चाहिए। आदमी एक परिस्थिति से दूसरी ऊंची परिस्थितियों से तुलना कर अपनी सहिष्णुता को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

मंगल प्रवचन के पश्चात आचार्यश्री ने समुपस्थित लोगों को अहिंसा यात्रा की अवगति प्रदान कर तीनों संकल्पों को स्वीकार करने को उत्प्रेरित किया तो उपस्थित लोगों सहर्ष अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार की। आचार्यश्री के मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान की।

नागरिक अभिनन्दन समारोह का कार्यक्रम भी आयोजित हुआ। जिसमें केरल उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री नारायण कुरूप, केरला पोर्ट चेयरमेन श्री वी.जे. मैथ्यु, एर्नाकुलम जिले के भाजपा जिलाध्यक्ष श्री सी.जी. राजगोपाल मुथू व मूर्तिपूजक समाज-कोच्चि के अध्यक्ष श्री नवरतन पोरवाल ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथी सभा-कोच्चि के अध्यक्ष श्री रतनलाल बाफना ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ समाज-कोच्चि के समस्त सदस्यों ने स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति के माध्यम से अपने आराध्य के श्रीचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की।